WARREN HASTINGS (PART-2)

For U.G.Part-3,Paper-6

वारेन हेस्टिंग्स के वाणिज्य संबंधी सुधार

वाणिज्य सुधार के अंतर्गत हेस्टिंग्स ने जमींदारों के क्षेत्र में कार्य कर रहे शुल्क गृहों को बंद करवा दिया। अब **कलकत्ता**, **हुगली** **मुर्शिदाबाद** ,**ढाका** तथा **पटना** में शुल्क गृह रखे गए। दस्तक की प्रथा समाप्त कर दी गई तथा शुल्क की दर मात्र **ढाई प्रतिशत** कर दी गई जो सबको देना था। हेस्टिंग्स ने कंपनी के अधिकारियों को व्यक्तिगत व्यापार पर दी जाने वाली छूट को समाप्त कर दिया । नमक तथा अफीम का व्यापार पूर्ण रूप से सरकार के नियंत्रण में रखा गया व्यापारियों की सहायता के लिए कलकत्ता में बैंक की स्थापना की गई। **कलकत्ता** में सरकारी टकसाल भी स्थापित किया गया और निश्चित मूल्य की मुद्राएं ढाली जाने लगी। वारेन हेस्टिंग्स ने **व्यापारिक परिषद** का गठन किया जो कंपनी के लिए माल खरीदने में सहायता करती थी।उसने **तिब्बत** तथा **भूटान** से व्यापार बढ़ाने के लिए भी प्रयत्न किए।

Scanned with CamScanner

सामाजिक सुधार

सामाजिक सुधारों के अंतर्गत हेस्टिंग्स ने **1781** में **कलकत्ता** में मुस्लिम शिक्षा के विकास के लिए **प्रथम मदरसा** स्थापित किया इसके समय में ही **1792** में **जोनाथन डंकन** ने **बनारस** में **संस्कृत कॉलेज** की स्थापना की। गीता के अंग्रेजी अनुवादकार **विलियम विलकिंस** को हेस्टिंग्स ने आश्रय प्रदान किया। प्राच्य कला तथा विज्ञान के अध्ययन के लिए सर विलियम जोंस द्वारा **1788** में हेस्टिंग्स के समय में ही '**द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल**' की स्थापना की। वारेन हेस्टिंग्स ने हिंदू तथा मुस्लिम कानूनों को भी एक पुस्तक का रूप देने का प्रयत्न किया ।**1776** में **संस्कृत** में पुस्तक **कोड ऑफ जेण्टू लॉ** प्रकाशित की गई। 1791 में विलियम जॉन्स तथा कोलब्रुक की **डाइजेस्ट ऑफ हिंदू लॉ** छापी गई। इसी प्रकार **फतवा ए आलम गिरी** का अंग्रेजी अनुवाद करने का भी प्रयास हुआ। हेस्टिंग्स स्वंय अरबी, फारसी का जानकार था और बांग्ला भाषा बोल सकता था।

वारेन हेस्टिंग्स का भारतीय शक्तियों के साथ संबंध

वारेन हेस्टिंग्स का मुख्य उद्वेश्य ब्रिटिश हितों की रक्षा करना तथा कंपनी के राजनीतिक प्रभाव का विस्तार करना था। इस

Scanned with CamScanner

समय भारत की राजनीतिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन आ चुका था ।मराठे पानीपत की हार से उबर चुके थे और पुनः उत्तर भारत में उनकी गतिविधियां बढ़ गई थी। दिल्ली का सम्राट शाह आलम अंग्रेजों का संरक्षण छोड़कर मराठों(सिंधिया)के संरक्षण में दिल्ली चला गया था। दक्षिण में हैदर अली कंपनी से प्रतिशोध लेने की योजना बना रहा था। इस समय वारेन हेस्टिंग्स को इंग्लैंड से भी सहायता मिलने की आशा नहीं थी क्योंकि इंग्लैंड अमेरिकी उपनिवेशों के साथ युद्ध में फंसा था। इस विषम परिस्थिति में हेस्टिंग्स ने कंपनी के हितों को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कई प्रयास किए।

- हेस्टिंग्स ने **मुगल सम्राट शाह आलम** को दी जाने वाली 26 लाख रुपए वार्षिक की पेंशन बंद कर दी और बाद में कड़ा तथा इलाहाबाद के जिले शाह आलम से छीन कर 50 लाख में अवध के नवाब शुजाउद्दौला को बेच दिया। हेस्टिंग्स का तर्क था कि चुकि ये जिले शाह आलम को अंग्रेजी संरक्षण में रहने के लिए मिले थे लेकिन वह मराठों के संरक्षण में चला गया तो इन जिलों पर उसका कोई अधिकार नहीं रह गया।

Scanned with CamScanner

- वारेन हेस्टिंग्स ने **<u>अवध के साथ संबंधों</u>** को पुनः निर्धारण आवश्यक समझा क्योंकि उसने महसूस किया कि यदि अवश्य संबंधों की पुनः समीक्षा नहीं की गई वह मराठों के साथ चला जाएगा अथवा मराठों से मिलकर रोहिलखंड को बांट लेगा। यही कारण है कि स्वयं बनारस गया और **1773** में नवाब से **बनारस की संधि** की। इससे **इलाहाबाद** तथा **कारा** के जिले नवाब को **50 लाख** में बेच दिए गए। इसके अतिरिक्त नवाब ने आवश्यकता पड़ने पर एक ब्रिगेड के लिए 30,000 रु. मासिक के स्थान पर **2,10,000 रू** मासिक देना स्वीकार किया। यदि नवाब रूहेलों के विरुद्ध कंपनी की सेना की सहायता मांगे तो उसे **40 लाख रूपया** देना होगा। इस संधि से कंपनी को वित्तीय लाभ, एक सुरक्षित सीमा, सुदृढ़ अवध राज्य इत्यादि तो मिले ही अवध और रूहेलों बीच मित्रता के संभावनाएं भी समाप्त हो गई।

To be continued...

BY: ARUN KUMAR RAI

Asst.Professor

P.G. Dept.of History,

Maharaja College,Ara

Scanned with CamScanner